Goodess Shashti Devi Mantra Sadhana

सन्तान प्राप्ति हेतु षष्ठी देवी मंत्रोपासना

SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही तीन ऋण लेकर उत्पन्न होता है। ये तीन ऋण- देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण हैं। देवोपासना, धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन, ऋषियों-मुनियों के निर्देशों का अनुसरण और ब्रह्मचर्य का पालन करने से देव और ऋषि तृप्त होते हैं और पिता की जीवित अवस्था में उनका अनुसरण करना, मृत्यु के अनन्तर श्राद्धकाल में ब्राह्मणों को उत्तम भोजन कराना तथा गया में पिण्डदान कराना- ये तीन मुख्य कर्त्तव्य, पुत्र के अपने पिता के लिये हैं, जिसका पालन करने से मनुष्य पितृऋण से मुक्त होता है। पितृलोक को मुक्ति एवं सद्गति प्रदान करने के लिये उत्तम पुत्ररत्न अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त समाजिक दृष्टि से भी संतानसुख अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शास्त्रों में सन्तान प्राप्ति के लिये अनेंको विधान एवं उपाय बताये गये हैं। उनमें से यहां षष्ठी देवी की साधना विधि प्रस्तुत की जा रही है।

जिनको विवाह के वर्षोंपरान्त् भी सन्तान सुख नहीं मिल पाता, उनके लिये षष्ठी देवी की मंत्रोपासना लाभकारी है। संतान प्राप्ति हेतु यह साधना शुभ व शीघ्रफलदायी है। मूल प्रकृति के छठें

अंश से प्रकट होने के कारण इन्हें 'षष्ठी' देवी कहा जाता है। ये बालकों की अधिष्ठात्री देवी हैं, इन्हें 'बालदा' और 'विष्णुमाया' भी कहा जाता है। संतान के इच्छुक पति-पत्नी दोनों मिलकर इनकी उपासना करें तो शीघ्रफल प्राप्त होता है। जब तक कार्य सिद्ध न हो तब तक सवा लाख जप का अनुष्ठान करते रहें। अगर शक्ति हो तो प्रत्येक बार अनुष्ठान के अंत में होमादि कर्म का भी आयोजन करें या करवायें। पूर्ण विधि से दैवीयकर्म सम्पन्न किया जाये, तो कार्य शीघ्र सिद्ध होता है। गर्भ का न ठहरना, गर्भपात दोष, प्रसवपीड़ा या संतान का जन्म के बाद समाप्त हो जाना, इन सभी दोषों के निवारण के लिये विधिवत् षष्ठी देवी की उपासना करनी चाहिये। इनकी सेवा से पुत्र की इच्छा रखने वालों को पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है और इसके अतिरिक्त जन्म के उपरान्त् बालक के ऊपर किसी व्याधि या संकट की छाया हो या बालक में कोई शारीरिक या मानसिक रोग हो तो इनकी उपासना से सब दोष समाप्त हो जाते हैं। निरन्तर इनकी भक्ति करने से घर में धन-धान्य का आगमन होता है और समाज में प्रतिष्ठा की अभिवृद्धि होती है।

सुश्रुत संहिता में छोटे शिशुओं में जो रोग उत्पन्न होते हैं, उन्हें ग्रहों से उत्पन्न बताया गया है। स्कन्दग्रह, स्कन्दापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, अन्धपूतना, शीतपूतना, मुखमण्डिका और नैगमेय (पितृग्रह)- ये नौ ग्रह शिशुओं से सम्बन्धित बताये गये हैं। इन ग्रहों से पीड़ीत बालक के लक्षण अलग-अलग होते हैं। लक्षणों के आधार पर यह ज्ञान हो जाता है कि बालक किस ग्रह से पीड़ीत है। जैसे- नैगमेय ग्रह से पीड़ीत बालक के मुख से झाग गिरता है, वह हर समय बैचेन रहता है तथा ऊपर की ओर देखता हुआ बराबर रोता है, ज्वर से पीड़ीत रहता है, उसके शरीर से वसा के समान गंध आती है, वह बार-बार बेहोश हो जाता है इत्यादि। नवजात शिशु की शारीरिक तथा मानसिक शक्ति शून्य के बराबर होती है। इसलिये उनकी समस्त प्रकार से रक्षा हेतु माताओं को भगवती षष्ठी देवी के साथ उनके स्वामी कार्तिकेय की उपासना करनी चाहिये। अगर माता-पिता दोनों अपने पुत्र के निमित्त संकल्प लेकर इनकी उपासना करते रहें, तो उस बालक का पूर्ण जीवन संकटों से मुक्त होकर सौभाग्यशाली रहता है। तेज, बुद्धि और विद्या में भी अद्भुत लाभ होता है। शालग्राम शिला, वटवृक्ष के मूल में अथवा भगवती दुर्गा के समक्ष इस साधना को सम्पन्न किया

जा सकता है। मंत्रोपासना के साथ प्रत्येक माह की षष्ठी तिथि में इनके व्रत का भी विधान है। इसके अतिरिक्त धार्मिक कर्म, जैसे- गौ के साथ उसके बछड़े और निर्धन एवं अनाथ बच्चों की सेवा तथा सहायता करने से शीघ्र ही दैवीय सहायता मिलती है।

ध्यानम्- श्वेत चम्पक वर्णाभां, रत्नभूषण भूषिताम्। पवित्ररूपां परमा, देव सेनां परां भजे।।

मंत्र- 'ॐ ह्रीं षष्ठी दैव्यै स्वाहा।'

षष्ठीदेवी स्तोत्रम्- श्रीनारायण उवाच- स्तोत्रं श्रृणु मुनि श्रेष्ठ सर्वकाम शुभावहं। वांछा प्रदंच सर्वेषां गूढं वेदेषु नारद।।

नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धयै शान्त्यै नमो नमः। शुभायै देवसेनायै षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः।1।

वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः। सुखदायै मोक्षदायै षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः।2।

षष्ठयै (सष्टयै) षष्ठांश रूपायै सिद्धायै च नमो नमः। मायायै सिद्ध योगिन्यै षष्ठी देव्यै नमो नमः।3।

सारायै शारदायै च परा देव्यै नमो नमः। बालाधिष्ठातृ देव्यै च षष्ठी देव्यै नमो नमः।4।

कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम्। प्रत्यक्षायै स्वभक्तानां षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः।5।

पूज्यायै स्कंद कान्तायै सर्वेषां सर्वकर्मसु। देव रक्षण कारिण्यै षष्ठी देव्यै नमो नमः।6।

सिद्ध (शुद्ध) सत्व स्वरूपायै वंदितायै नृणांसदा। हिंसाक्रोध वर्जितायै षष्ठी देव्यै नमो नमः।7।

धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरी। मानं देहि जयं देहि द्विषो जहि महेश्वरी।8।

धर्मं देहि यशो देहि षष्ठि देव्यै नमो नमः। देहि भूमिं प्रजां देहि विद्यां देहि सुपूजिते।9।

कल्याणं च जयं देहि षष्ठि देव्यै नमो नमः। इति देवीं च संस्तूय लेभे पुत्रं प्रियव्रत।10।

यशस्विनं च राजेन्द्र षष्ठि देव्या प्रसादतः। षष्ठि स्तोत्रं मिदं ब्रह्मन्यः श्रणोति तु वत्सरम्।11।

अपुत्रो लभते पुत्रं वरं सुचिरजीविनम्। वर्षमेकं च यो भक्त्या संपूज्येदं श्रृणोति च।12।

सर्व पापाद्विनिर्मुक्तौ महावन्ध्या प्रसूयते। वीरं पुत्रं च गुणिनं विद्यावंतं यशस्विनं।13।

सुचिरायुष्य वंतं च सूते देवी प्रसादतः। काकवन्ध्या च या नारी मृतवत्सा च या भवेत्।14।

वर्ष श्रुत्वा लभेत्पुत्रं षष्ठि देवी प्रसादतः। रोग युक्ते च बाले च पिता माता श्रृणोति चेत्।15। मासे विमुच्यते बालः षष्ठि देवी प्रसादतः।

देवी के अद्भुत नाम- स्वाहा, स्वधा, महाविद्या, मेधा, लक्ष्मी, सरस्वती, सती, दाक्षायणी, विद्या, इच्छा, शक्ति, क्रियात्मिका, अर्पणा, एकपर्णा, एकपाटला, उमा, हैमवती, कल्याणी, एकमातृका, ख्याति, प्रज्ञा, महाभागा, गौरी, गणाम्बिका, महादेवी, नन्दिनी, जातवेदसी, सावित्री, वरदा, पुण्या, पावनी, लोकविश्रुता, आज्ञा, आवेशनी, कृष्णा, तामसी, सात्त्विकी, शिवा, प्रकृति, विकृता, रौद्री, दुर्गा, भद्रा, प्रमाथिनी, कालरात्रि, महामाया, रेवती,

भूतनायिका, गौतमी, कौशिकी, आर्या, चण्डी, कात्यायनी, सती, कुमारी, यादवी, देवी, वरदा, कृष्णपिंगला, बर्हिध्वजा, शूलधरा, परमा, ब्रह्मचारिणी, महेन्द्रोपेन्द्रभगिनी, दृषद्वती, एकशूलधृक्, अपराजिता, बहुभुजा, प्रगल्भा, सिंहवाहिनी, शुम्भादिदैत्यहन्त्री, महामहिषमर्दिनी, अमोघा, विन्ध्यनिलया, विक्रान्ता, गणनायिका।

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक आदिशक्ति के इन नामों का पठन करते हैं, शनैः शनैः उनके पापकर्म स्वाहा हो जाते हैं। जंगल में, पर्वत पर, नगर में, घर में, जल अथवा स्थल कहीं भी रक्षा हेतु इनका स्मरण करना चाहिये। बुरे ग्रहों, भूतों, पूतना तथा मातृगणों से पीड़ीत शिशुओं की रक्षा के लिये इन नामों का चिन्तन अभय प्रदान करता है। षष्ठी देवी के जप एवं स्तोत्र के साथ नित्य इन नामों का पाठ करने से त्वरित फल मिलता है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana